International Journal of Research inSocial Science
Vol. 12 Issue 04, April 2022,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

स्वामी विवेकानंद की मानव–निर्माण शिक्षा में शिक्षक की भूमिका

बिमलेश कुमार दुबे, शोधार्थी, शिक्षा संकाय, आई आई एम टी विश्वविद्यालय, मेरठ

डा संजीव कुमार, शोध निर्देशक, प्रोफेसर कालेज ऑफ एजुकेशन, आई आई एम टी विश्वविद्यालय, मेरठ

सार

स्वामी विवेकानंद बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। दुनिया ने उन्हें एक देशभक्त संत, कला और वास्तुकला के प्रेमी, एक शास्त्रीय गायक, महान आकर्षण के एक प्रमुख वक्ता, एक दूरदर्शी, एक दार्शनिक, एक शिक्षाविद् और सबसे बढ़कर मानवता के उपासक के रूप में पाया। उन्होंने कहा कि शिक्षा को "जीवन–निर्माण, मानव–निर्माण और चरित्र–निर्माण विचारों को आत्मसात करना" प्रदान करना चाहिए। प्रेम, शांति और समानता पर आधारित उनके शैक्षिक विचार जिन्होंने पूरी दुनिया को एक साथ रखा। वह बुद्धिजीवियों की आकाशगंगा में एक चमकते सितारे की तरह चमकता है। वे नए प्रकाश, नए पथ और मानवतावाद के पथ प्रदर्शक थे। भारत की सोच और संस्कृति में उनका योगदान किसी से पीछे नहीं है। आधुनिक भारत को जगाने में उनका योगदान इसकी किस्म और गुणवत्ता में समालोचना है। यदि शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन के सबसे शक्तिशाली साधन के रूप में देखा जाता है, तो शैक्षिक विचार में उनका योगदान सर्वोपरि है। वह शिक्षा को "ईश्वरीय पूर्णता की अभिव्यक्ति के रूप में परिभाषित करता है जो पहले से ही मनुष्य में है। स्वामीजी की मानव–निर्माण शिक्षा उनके जीवन के वेदांत दर्शन पर आधारित है। मानव–निर्माण शिक्षा का अर्थ विवेकानन्द के लिए है जो मनुष्य को उसके आवश्यक दैवीय स्वभाव के प्रति जागरूक बनाता है, जिससे वह हमेशा अपनी सहज आध्यात्मिक शक्ति पर निर्भर रहता है।

मुख्य भाब्दः बहुमुखी, दूरदर्शी, आधुनिक भारत, समालोचना

परिचय

"सभी शिक्षा, सभी प्रशिक्षण का आदर्श मानव–निर्माण होना चाहिए। लेकिन, इसके बजाय, हम हमेशा बाहर को चमकाने की कोशिश कर रहे हैं। जब अंदर नहीं है तो बाहर को चमकाने से क्या फायदा?

स्वामी विवेकानंद

स्वामी विवेकानंद का विचार है कि शिक्षा ज्ञान की जानकारी नहीं है जो एक बच्चे के दिमाग में बलपूर्वक डाली जाएगी (निथिया, 2012)। ज्ञान मनुष्य में निहित है, कोई ज्ञान बाहर से नहीं आता; यह सब अंदर है। स्वामी विवेकानंद बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। दुनिया ने उन्हें एक देशभक्त संत, कला और वास्तुकला के प्रेमी, एक शास्त्रीय गायक, महान आकर्षण के एक प्रमुख वक्ता, एक दूरदर्शी,

एक दार्शनिक, एक शिक्षाविद् और सबसे बढ़कर मानवता के उपासक के रूप में पाया। स्वामी विवेकानंद के अनुसार अपने आप को सिखाओ, सभी को उसका वास्तविक स्वरूप सिखाओ, सोई हुई आत्मा को बुलाओ और देखो कि वह कैसे जागती है। शक्ति आएगी, महिमा आएगी, अच्छाई आएगी, पवित्रता आएगी और जो कुछ भी उत्कृष्ट है वह तब आएगा जब यह सोई हुई आत्मा आत्म–चेतन गतिविधि के लिए जागृत होगी (बनर्जी और मीता, 2015)। स्वामी विवेकानंद भारतीय लोगों के सांस्कृतिक और आध्यात्मिक इतिहास में एक अग्रणी व्यक्ति हैं। शिक्षा के बारे में उनका दूरगामी विचार समय के साथ दुनिया भर में विचारशील लोगों की बढ़ती संख्या को प्रभावित कर रहा है। उन्होंने सत्य का सार, वेदांत, पुरुषों का भाईचारा, मानवता की एकता, धर्मों की सद्भाव और भौतिकवाद पर अध्यात्म की सर्वोच्चता का प्रचार किया। वह पूर्व के अध्यात्मवाद और पश्चिम के भौतिकवाद के बीच एक सुखद सम्मिश्रण लाने में सक्षम हो सकता है। शिक्षा, उन्होंने कहा, "जीवन–निर्माण, मानव–निर्माण और चरित्र–निर्माण विचारों को आत्मसात करना" (सीडब्ल्यू.3.302) प्रदान करना चाहिए। स्वामी विवेकानंद कहते हैं कि यह सोचना गलत है कि हम बच्चे के विकास को बढ़ावा देते हैं। वास्तव में, वह स्वयं अपने विकास को आगे बढ़ाता है। वे कहते हैं, "हर कोई अपने स्वभाव के अनुसार विकसित होता है। समय आने पर सभी को इस सच्चाई का पता चल जाएगा। क्या आपको लगता है कि आप एक बच्चे को शिक्षित कर सकते हैं? बच्चा खुद को शिक्षित करेगा, आपका काम उसे आवश्यक अवसर प्रदान करना और उसके रास्ते में आने वाली बाधाओं को दूर करना है। वह स्वयं ही शिक्षा ग्रहण करेगा। एक पौधा अपने आप बढ़ता है, क्या माली उसे उगाता है? वह बस इसे आवश्यक वातावरण प्रदान करता है; यह पौधा ही है जो अपना विकास स्वयं करता है।" इस प्रकार स्वामी विवेकानंद स्व–शिक्षा के सिद्धांत की वकालत करते हैं। वह बुद्धिजीवियों की आकाशगंगा में एक चमकते सितारे की तरह चमकता है। वे नए प्रकाश, नए पथ और मानवतावाद के पथ प्रदर्शक थे। भारत की सोच और संस्कृति में उनका योगदान किसी से पीछे नहीं है। उन्होंने अपने सर्वांगीण प्रयासों के माध्यम से भारत के पतन के कारणों का पता लगाने और उन्हें दूर करने का प्रयास किया। उन्होंने महस्स किया कि भारत के पतन का मुख्य कारण जनता की उपेक्षा है। विवेकानंद सभी के बीच एकता की भावना विकसित करना चाहते हैं, एकता जो भारत की स्थिरता और प्रगति के लिए एकमात्र आश्वस्त सिद्धांत है। आधुनिक भारत को जगाने में उनका योगदान इसकी किस्म और गुणवत्ता में समालोचना है। यदि शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन के सबसे शक्तिशाली साधन के रूप में देखा जाता है, तो शैक्षिक विचार में उनका योगदान सर्वोपरि है

आज हम इक्कीसवीं सदी में जी रहे हैं। यह आविष्कारों का युग है जो नवाचार करता है। भारत की साक्षरता दर में वृद्धि होती है। और भारत का नागरिक शिक्षित नहीं साक्षर बनता है। वे लिख और बोल सकते हैं, लेकिन उन्हें समझ में नहीं आया कि क्या लिखा गया है और यह क्यों लिखा गया है एक सरल उदाहरण अवधारणा को स्पष्ट कर सकता है, हम सभी सिगरेट के पैकेट पर लिखी वैधानिक चेतावनी पढ़ सकत हैं धूम्रपान से कैंसर होता है लेकिन हम इसे नहीं लेते हैं। गंभीरता से,

हम इसे समझ नहीं सकते हैं या हम इसे समझना नहीं चाहते हैं। यह एक महान उदाहरण है कि हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली कई शिक्षित निरक्षरों को पैदा करती है जो सब कुछ जानते हैं लेकिन अपने जीवन म कभी भी उनका अभ्यास करने की कोशिश नहीं करते हैं। हम ऐसी शिक्षा का क्या करेंगे जिसका कोई व्यावहारिक प्रभाव नहीं है? शिक्षा एक व्यवसाय बन गया है और किसी को शिक्षा के वास्तविक उद्देश्य की परवाह नहीं है और व्यक्ति को दान में अधिक भुगतान करना पड़ता है और काई वास्तविक शिक्षा नहीं मिलती है। आज की शिक्षा केवल पैसा कमाने की मशीनें पैदा करती है। नैतिक मूल्यों का क्षरण हो रहा है। सामाजिक ताना–बाना कमजोर होता जा रहा है। हम सैद्धांतिक ज्ञान आधारित शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। यह मूल्य क्षरण, भ्रष्टाचार, गैरकानूनी गतिविधियों आदि को उत्पन्न करता है। शिक्षा शब्द स्वयं "एडुसेरे" शब्द से आया है जिसका अर्थ है कि जो पहले से है उसे बाहर लाना है और आँख बंद करके सामान नहीं करना है। शिक्षा का उद्देश्य प्रतिभा को सक्रिय रूप से पहचानना है (माधवी, 2014)) वास्तविक शिक्षा वह है जो व्यक्ति को अपने पैरों पर खड़ा होने में सक्षम बनाती है। शिक्षा वह मात्रा नहीं है जो आपके मस्तिष्क में डाली जाती है और वहां दंगा करती है, जो जीवन भर नहीं पचाती है। भारत ने स्वतंत्रता प्राप्त करने और अपनी शिक्षा नीति तैयार करने से बहुत पहले, स्वामी विवेकानंद ने एक वास्तविक शिक्षा की आवश्यकता को समझा था जो एक व्यक्ति के भीतर आंतरिक सुपर क्षमताओं को बढ़ाती है।

प्रचलित शैक्षिक प्रणाली की आलोचना

समकालीन शिक्षा व्यवस्था के खिलाफ विवेकानंद द्वारा उठाई गई मुख्य आपत्ति यह थी कि इसने पुरुषों को गुलाम बना दिया, गुलामी में सक्षम और कुछ नहीं। प्रचलित विश्वविद्यालय शिक्षा के बारे में उन्होंने टिप्पणी की कि यह तेजी से क्लर्कों को निकालने के लिए एक कुशल मशीन से बेहतर नहीं था। इसने लोगों को उनके विश्वास और विश्वास से वंचित कर दिया। अंग्रेजी पढ़े–लिखे लोगों का मानना था कि गीता झूठी है और वेद ग्रामीण लोककथाओं से ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं हैं। इस शिक्षा प्रणाली की आलोचना करते हुए विवेकानंद ने इसकी तुलना उस व्यक्ति से की जो अपने गधे को घोड़े में बदलना चाहता था, उसे इस परिवर्तन को प्राप्त करने के लिए गधे को पीटने की सलाह दी गई और इस प्रक्रिया में अपने गधे को मार डाला। विवेकानंद ने मानवतावादी दृष्टिकोण से शिक्षा की समकालीन प्रणाली की भी आलोचना की। वह एक मानवतावादी थे और उन्होंने मानव–निर्माण के लिए शिक्षा की वकालत की। अंग्रेजों द्वारा प्रतिपादित शिक्षा ऐसी नहीं थी। इसलिए विवेकानंद ने इसकी निंदा की। उन्होंने टिप्पणी की, "यह एक मानव–निर्माण शिक्षा नहीं है, यह केवल और पूरी तरह से एक नकारात्मक शिक्षा है। एक नकारात्मक शिक्षा या कोई भी प्रशिक्षण जो नकार पर आधारित है, मृत्यु से भी बदतर है। बच्चे को स्कूल ले जाया जाता है, और पहली बात वह सीखता है कि उसके पिता मूर्ख हैं, दूसरी बात यह है कि उसके दादा पागल हैं, तीसरी बात यह है कि उसके सभी शिक्षक पाखंडी हैं, चौथी बात यह है कि सभी पवित्र पुस्तकें झूठ हैं। . जब तक वह सोलह वर्ष का होता है, तब तक वह निषेध, निर्जीव और अस्थिहीन होता है। और नतीजा यह है कि पचास

साल की ऐसी शिक्षा ने तीनों प्रेसीडेंसियों में एक भी मूल व्यक्ति नहीं बनाया है। मौलिकता का हर आदमी जो पैदा हुआ है, वह कहीं और शिक्षा प्राप्त कर चुका है, न कि इस देश में या फिर वे अपने आप को अंधविश्वासों से मुक्त करने के लिए पुराने विश्वविद्यालयों में गए हैं।"

अध्ययन का उद्देश्य

यह लेख लेखक द्वारा निम्नलिखित उद्देश्यों को प्रस्तुत करने और उनका अवलोकन करने का एक प्रयास है:

- स्वामी विवेकानंद की अवधारणा और मनुष्य की विशेषताओं और मानव निर्माण शिक्षा के तत्वों को इंगित करना।
- मानव–निर्माण शिक्षा में शिक्षक की भूमिका को जानना।

अध्ययन की पद्धति

यह अध्ययन पूर्णतः सैद्धान्तिक आधारित था। अध्ययन के लिए जानकारी मुख्य रूप से दो प्रमुख स्रोतों से एकत्र की गई है, स्वामी विवेकानंद की जीवनी को केवल डेटा संग्रह के प्राथमिक स्रोत के रूप में अध्ययन करने के लिए और माध्यमिक स्रोतों के रूप में, अन्वेषक को विभिन्न प्रकार की पुस्तकों, पत्रिकाओं, लिखित लेखों से डेटा एकत्र किया गया था। स्वामी विवेकानंद की मानव निर्माण शिक्षा के बारे में महान शिक्षकों द्वारा। अध्ययन केवल स्वामी विवेकानंद की मानव–निर्माण शिक्षा तक सीमित था।

चर्चाएँ

स्वामी विवेकानंद की मनुष्य में बहुत आस्था है। वह सोचता है कि मनुष्य ईश्वर की सर्वोच्च रचना है। विवेकानंद ने कहा, "यदि आप वास्तव में मनुष्य के चरित्र का न्याय करना चाहते हैं, तो उसके महान प्रदर्शन को न देखें। एक आदमी को उसके सामान्य कार्यों को करते हुए देख।" ये क्रियाएं एक व्यक्ति को प्रकट करती हैं कि वह वास्तव में कैसा है। विवेकानंद के गुरु, श्री रामकृष्ण, कहा करते थे कि मानुष को मनुष्य होना चाहिए और चुप रहना चाहिए – अर्थात मनुष्य को सच्चा मनुष्य बनने की आवश्यकता है। "वह अकेला एक आदमी है," उन्होंने कहा, "जिसकी आध्यात्मिक चेतना जागृत हो गई है"। अपने गुरु का अनुसरण करते हुए, विवेकानंद ने इस बात पर जोर दिया कि "सभी शिक्षा, सभी प्रशिक्षण का आदर्श, यह मानव–निर्माण होना चाहिए"।

MAN तीन अक्षरों का योग है, अर्थात।

M = नैतिकता

A = क्षमता

N = बड़प्पन

वह किसी व्यक्ति को शिक्षित नहीं मानता यदि वह कुछ परीक्षा उत्तीर्ण करने और अच्छे व्याख्यान देने का प्रबंधन करता है। सामाजिक या राजनीतिक सभी व्यवस्थाओं का आधार मनुष्य की अच्छाई है।

मनुष्य के लक्षण

- विवेकानंद की "आत्मा की संभावित दिव्यता" की अवधारणा आदर्श मनुष्य की एक नई, शानदार अवधारणा देती है।
- वर्तमान युग मानवतावाद का युग है जो मानता है कि मनुष्य को सभी गतिविधियों और सोच का मुख्य सरोकार और केंद्र होना चाहिए।
- विज्ञान और प्रौद्योगिकी के माध्यम से मनुष्य ने महान समृद्धि और शक्ति प्राप्त की है, और संचार और यात्रा के आधुनिक तरीका ने मानव समाज को "वैश्विक गांव" में बदल दिया है।
- विवेकानंद की आत्मा की संभावित दिव्यता की अवधारणा इस गिरावट को रोकती है, मानवीय रिश्तों को दिव्य बनाती है, और जीवन को सार्थक और जीने लायक बनाती है।
- स्वामीजी ने "आध्यात्मिक मानवतावाद" की नींव रखी है, जो कई नव–मानवतावादी आंदोलनों और दुनिया भर में ध्यान में वर्तमान रुचि के माध्यम से खुद को प्रकट कर रहा है।
- प्रत्येक व्यक्ति का चरित्र छापों के कुल योग से निर्धारित होता है। अच्छा प्रभाव हो तो चरित्र अच्छा बनता है; खराब हो तो खराब हो जाता है।
- विवेकानंद के अनसार, मनुष्य की पूजा ही ईश्वर की वास्तविक पूजा है। व्यक्तिगत खुशी सार्वभौमिक खुशी के साथ निहित है।
- स्वामी विवेकानंद ने महसूस किया कि प्रत्येक व्यक्ति को महान, प्रत्येक राष्ट्र को महान बनाने के लिए तीन चीजें आवश्यक हैं।
- अच्छाई की शक्तियों का दृढ़ विश्वास।
- ईर्ष्या और संदह का अभाव।
- उन सभी की मदद करना जो अच्छा बनने और अच्छा करने की कोशिश कर रहे हैं।

स्वामी विवेकानंद की मानव–निर्माण शिक्षा

स्वामी विवेकानंद की महत्वपूर्ण अवधारणाओं में से एक युवाओं के बीच एक मजबूत चरित्र के निर्माण का मुद्दा है। उन्होंने एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की वकालत की जो वास्तव में मानव निर्माण और चरित्र निर्माण हो। शिक्षा पर विवेकानंद की दृष्टि शारीरिक शिक्षा, नैतिक और धार्मिक शिक्षा, शिक्षा का माध्यम, महिला शिक्षा और समाज के कमजोर वर्गों के लिए शिक्षा से संबंधित है और शिक्षा की उनकी अवधारणा का इस ग्यारह शब्दों के भीतर समाहित किया जा सकता है "शिक्षा दिव्य पूर्णता की अभिव्यक्ति है। पहले से ही मनुष्य में है।" इस कथन से तीन महत्वपूर्ण संदेश निकले – प्रकटीकरण, पूर्णता, पहले से ही मनुष्य में। लेकिन विवेकानंद की मानव निर्माण शिक्षा एक बहुत व्यापक अवधारणा है। स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि शिक्षा सभी बुराइयों का रामबाण इलाज है। उनका यह दृढ़ विश्वास था कि केवल सही प्रकार की शिक्षा से ही व्यक्तियों का रूपान्तरण किया जा सकता है।

स्वामी विवेकानंद ने 'दिव्य' को गरीबों के रूप में देखा, जिन्हें उन्होंने 'दरिद्र नारायण' कहा। यह मानव–निर्माण शिक्षा की दिशा को दर्शाता है। इसका तात्पर्य यह है कि शिक्षा में सेवा की भावना विकसित होनी चाहिए और गरीबों और जरूरतमंदों को खुद को ऊपर उठाने में मदद करनी चाहिए। मानव–निर्माण शिक्षा 1893 में शिकागो में आयोजित धर्म संसद मे विवेकानंद द्वारा कहे गए प्रसिद्ध शब्दों के महत्व को भी सामने लाती है। ये थेः सहायता, आत्मसात, सद्भाव और शांति तदनुसार शिक्षा को मनुष्य में इन गुणों का विकास करना चाहिए। मानव–निर्माण शिक्षा चरित्र विकास के साथ–साथ व्यावसायिक विकास में निहित है (गुप्ता, एस., 2009) स्वामी विवेकानंद ने कहाः "मानव–निर्माण मेरे जीवन का मिशन है। मैं कोई राजनेता नहीं हूं, न ही मैं एक समाज सुधारक हूं। फैशन मैन के लिए यह मेरा काम है ... मुझे केवल आत्मा की परवाह हैः जब यह सही होगा, तो सब कुछ अपने आप ठीक हो जाएगा"। "मानव–निर्माण" इस स्वामीजी ने अपने "नए सुसमाचार" के रूप में बात की, इसे न केवल संन्यासियों के लिए, न केवल भारतीयों के लिए, बल्कि सबसे गहन अर्थों में, हर जगह पुरुषों और महिलाओं के लिए लागू किया। वास्तव में, पुरुषों को बनाना और स्वामीजी की भाषा में गठित सर्वोच्च सत्य को एक ही मिशन– और उनके दिमाग में इस मिशन ने पृथ्वी पर उनके जीवन का केंद्रीय कार्य बनाया।

मानव–निर्माणः इसका वास्तव में मतलब है कि अन्धविश्वासी जाति को उसकी सहज आध्यात्मिक शक्ति और आवश्यक दैवीय प्रकृति के प्रति जागरुक करना। मनुष्य किसी भी तरह से किसी भी मूल का उत्तराधिकारी नहीं है

पाप, लेकिन, वास्तव में, अमृतस्य पुत्रः अमरता के बच्चे। मानवता के लिए ऐसा है वेदांत का मैग्ना कार्टा। मानव–निर्माण उनका मुख्य पूर्व–व्यवसाय था, क्योंकि वे इस तरह के एक स्वतंत्र, निडर चरित्र, ज्ञान और प्रेम में विश्वास करते थे जो दुनिया की आशा रखते थे। समाज में पाई जाने वाली सभी बीमारियों का एकमात्र समाधान मनुष्य का परिवर्तन है (बेहरा, 2015)। विवेकानंद के लिए मानव–निर्माण का अर्थ मनुष्य को उसकी आवश्यक दिव्य प्रकृति के बारे में जागरूकता के लिए जगाना है, जिससे वह हमेशा अपनी सहज आध्यात्मिक शक्ति पर निर्भर करता है। स्वामी विवेकानंद के शब्दों में, "सभी शिक्षा का अंत, सभी प्रशिक्षण मानव–निर्माण होना चाहिए"। यह मनुष्य बनाने वाला धर्म है जो हम चाहते हैं। यह मनुष्य बनाने वाले सिद्धांत हैं जो हम चाहते हैं। हम चाहते हैं कि मनुष्य की शिक्षा सर्वांगीण हो।

मानव–निर्माण शिक्षा के तत्व

सभी शिक्षा, सभी प्रशिक्षण का अंत मानव–निर्माण होना चाहिए। उसके लिए मानव निर्माण का अर्थ है शरीर, मन और आत्मा का सामंजस्यपूर्ण विकास। स्वामी विवेकानंद की मानव–निर्माण शिक्षा के प्रमुख तत्व उनके जीवन के वेदांत दर्शन पर आधारित हैं।

- मनुष्य बनाने वाली शिक्षा को ऐसे व्यक्तियों का विकास करना चाहिए जो नैतिक रूप से स्वस्थ, बौद्धिक रूप से तेज, शारीरिक रूप से मजबूत, धार्मिक रूप से उदार, आध्यात्मिक रूप से प्रबुद्ध और व्यावसायिक रूप से पर्याप्त हों।
- प्रत्येक व्यक्ति को यह समझना चाहिए कि मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य प्राप्त करना है
- निर्माता के साथ एकता"।
- सामाजिक समानता की प्राप्ति।
- मनुष्य को सभी धर्मों के प्रति सम्मान की भावना विकसित करनी चाहिए। उसे समझना चाहिए कि सभी धर्मों के आवश्यक तत्व समान हैं, और कोई भी धर्म दूसरे से श्रेष्ठ या निम्न नहीं है।
- मनुष्य को चाहिए कि वह सबके लिए प्रेम और घृणा किसी से न करे, क्योंकि प्रेम सभी धर्मों में सर्वोच्च भलाई है।
- मनुष्य की सेवा भगवान की भक्ति के समान है क्योंकि भगवान हर मानव हृदय में निवास करते हैं।
- मानव निर्माण शिक्षा मनुष्य को उसके वास्तविक स्व के प्रति जागरूक करने के लिए है।
- मनुष्य को विज्ञान और अध्यात्म का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। स्वामीजी ने विज्ञान और अध्यात्म के बीच एक संश्लेषण विकसित किया।
- स्वामी विवेकानंद मानवता के पैगम्बर थे। मनुष्य की उनकी अवधारणा पूर्व और पश्चिम की सांस्कृतिक सीमाओं से परे है। वह एक तर्कवादी थे और एक व्यक्ति को जीवन में एक तर्कसंगत दृष्टिकोण विकसित करना चाहिए।

मानव निर्माण शिक्षा में शिक्षक की भूमिका

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज की उपज है और समाज अपने विकास के लिए व्यक्ति पर निर्भर करता है। मनुष्य को एक सामाजिक प्राणी बनाने के लिए हमें एक शिक्षक के मजबूत हाथ की आवश्यकता है। आज शिक्षक को प्रोत्साहन, समर्थन और सुविधा प्रदान करने वाली विभिन्न भूमिकाएँ निभानी पड़ती हैं। महान शिक्षक महान छात्र बनाने में मदद करते हैं। शिक्षक ने समाज के इष्टतम विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। शिक्षक हमारी आने वाली पीढ़ियों के वास्तुकार के रूप में। शिक्षक छात्रों के लिए रोल मॉडल होते हैं और कक्षा में हर दिन अच्छे चरित्र के उदाहरण प्रदान कर सकते हैं। मैन मेकिंग एजुकेशन के उद्देश्य में शिक्षक ने एक बड़ी भूमिका निभाई। एक शिक्षक छात्रों के चरित्र, शरीर और दिमाग का निर्माण कर सकता है। विवेकानंद कहते हैं, "शिक्षा शिक्षक के साथ एक व्यक्तिगत संपर्क है" (गुरुगृहवास)। एक शिक्षक के व्यक्तिगत जीवन के बिना कोई शिक्षा नहीं होगी। यह मनुष्य का व्यक्तित्व है जो वास्तव में हमें प्रभावित करता है, न कि केवल उसके शब्द।

शब्द और विचार केवल एक–तिहाई का योगदान करते हैं और व्यक्तित्व दो–तिहाई वास्तविक मनुष्य के निर्माण में होता है। विवेकानंद कहते हैं कि बच्चा खुद पढ़ाता है। लेकिन एक शिक्षक इसे अपने तरीके से आगे बढ़ने में मदद कर सकता है। स्वामी विवेकानंद के अनुसार त्याग की प्रवृत्ति वाला व्यक्ति, अपने आदर्श उदाहरण के माध्यम से बच्चों को प्रभावित करता है, अपने छात्रों से प्यार करता है, उनकी कठिनाइयों के प्रति सहानुभूति रखता है, उनकी जरूरतों, क्षमताओं और रुचियों के अनुसार शिक्षण करता है, उनके आध्यात्मिक विकास में योगदान देता है, वह अच्छा हो सकता है। शिक्षक। मानव निर्माण शिक्षा में विभिन्न भूमिकाएँ इस प्रकार हैं:

- मानव–निर्माण की शिक्षा के लिए शिक्षक को विद्यार्थियों के स्तर पर उतरकर अपनी आत्मा को विद्यार्थी की आत्मा में स्थानान्तरित करना चाहिए।
- एक प्राचीन गुरु की तरह निस्वार्थ सेवा करने की दृष्टि से एक शिक्षक को शिक्षण पेशे के लिए समर्पित होना चाहिए।
- उसे अपने छात्रों के प्रति सहानुभूति रखनी चाहिए।
- शिक्षण के कार्य के पीछे एक शिक्षक के पास एक मिशनरी उत्साह और दिव्य उद्देश्य होना चाहिए।
- सच्चा मनुष्य बनाने के लिए शिक्षक को मित्र, दार्शनिक, मार्गदर्शक और त्यागी होना चाहिए।
- स्वामी विवेकानंद चाहते हैं कि शिक्षक बच्चे को प्राकृतिक रूप से विकसित होने के लिए उचित वातावरण प्रदान करे।
- शिक्षक प्रत्येक बच्च के शैक्षिक अनुभव का निर्धारण करते हैं। छात्रों के चरित्र निर्माण में इनकी अहम भूमिका होती है।
- शिक्षक को सकारात्मक विचार देना चाहिए; लोग बड़े होकर पुरुष बनेंगे और अपने पैरों पर खड़े होना सीखेंगे।
- शिक्षक को बच्चे को सही रास्ते पर ले जाना चाहिए।
- छात्र को उसकी क्षमता, योग्यता और प्रतिभा की खोज के लिए प्रदर्शित करना, राजी करना और प्रेरित करना।
- शिक्षक को एकाग्रता और गहन ध्यान द्वारा मन को विकसित करने के लिए विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करना चाहिए।
- शिक्षक को छात्रों को ज्ञान प्राप्त करने और उनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण, धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण और नागरिक जिम्मेदारी विकसित करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

एक शिक्षक की जिम्मेदारी की व्याख्या करने के लिए, स्वामीजी एक पौधे की वृद्धि का उल्लेख करते हैं। एक पौधे के मामले में, कोई उसे पानी, हवा और खाद की आपूर्ति के अलावा आर कुछ नहीं कर

सकता है जबकि यह अपनी प्रकृति से बढ़ता है। ऐसा ही एक बच्चे के साथ होता है। विवेकानंद की शिक्षा पद्धति आधुनिक शिक्षाविदों की अनुमानी पद्धति से मिलती जुलती है। इस प्रणाली के दौरान, शिक्षक छात्र में पूछताछ की भावना का आह्वान करता है, जिसे शिक्षक के पूर्वाग्रह मुक्त मार्गदर्शन के तहत अपने लिए चीजों का पता लगाना होता है।

शिक्षा के उद्देश्य

विवेकानंद दर्शन के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य निम्नलिखित हैं;

आत्म विकास

शिक्षा की समकालीन प्रणाली के विपरीत विवेकानंद ने आत्म–विकास के लिए शिक्षा की वकालत की। उन्होंने कहा, "शिक्षा से मेरा तात्पर्य वर्तमान प्रणाली से नहीं है, बल्कि सकारात्मक शिक्षण की पंक्ति से है। केवल किताबी शिक्षा से काम नहीं चलेगा। हम ऐसी शिक्षा चाहते हैं जिससे चरित्र का निर्माण हो, मन की शक्ति बढ़े, बुद्धि का विस्तार हो और व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा हो सके। हम जो चाहते हैं वह है वेदांत के साथ पश्चिमी विज्ञान, मार्गदर्शक आदर्श के रूप में ब्रह्मचर्य, और श्रद्धा, और स्वयं में विश्वास। " विवेकानंद के ये शब्द शिक्षा की विशिष्ट भारतीय परिभाषा का प्रतिनिधित्व करते हैं। अधिकांश पश्चिमी शिक्षाविदों के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य का पर्यावरण के साथ समायोजन करना है। दूसरी ओर, भारतीय दार्शनिक परंपरा के अनुसार, शिक्षा मनुष्य में निहित ज्ञान की प्राप्ति है। सच्चा ज्ञान बाहर से नहीं आता है, यह व्यक्ति के साथ, स्वयं में खोजा जाता है जो सभी ज्ञान का स्रोत है। विवेकानंद को फिर से उद्धृत करने क लिए, "दुनिया ने जो भी ज्ञान प्राप्त किया है वह दिमाग से आता है; ब्रह्मांड का अनंत पुस्तकालय आपके दिमाग में है। बाहरी दुनिया केवल सुझाव, अवसर है, जो आपको अपने मन का अध्ययन करने के लिए तैयार करती है।

सेब के गिरने से न्यूटन को सुझाव मिला और उन्होंने अपने मन का अध्ययन किया। उन्होंने अपने मन में विचार की सभी अनमोल कड़ियों को पुनर्व्यवस्थित किया और उनमें एक नई कड़ी की खोज की जिसे हम गुरुत्वाकर्षण का नियम कहते हैं। इस प्रकार, विवेकानंद के अनुसार, शिक्षा का कार्य हमारे मन में छिपे ज्ञान को उजागर करना है। शिक्षा आत्म–विकास की प्रक्रिया है। विवेकानंद के शब्दों में, "आप एक पौधे को उगाने से ज्यादा एक बच्चे को नहीं सिखा सकते। पौधा अपनी प्रकृति स्वयं विकसित करता है।" किसी व्यक्ति की शिक्षा का आकलन उसके द्वारा पढ़ी गई पुस्तकों की संख्या से नहीं बल्कि उसके दिमाग पर अज्ञानता के आवरण की मोटाई से होता है। यह आवरण जितना मोटा होता है, अज्ञान उतना ही बड़ा होता है। जैसे ही ज्ञान का प्रकाश होता है, अज्ञान का यह आवरण धीरे–धीरे बिखर जाता है। शिक्षक का काम अपने मार्गदर्शन से ज्ञान को उजागर करना है। उनका मार्गदर्शन मन को सक्रिय बनाता है और शिक्षित व्यक्ति स्वयं अपने भीतर छिपे ज्ञान को प्रकट करता है।

स्वधर्म की पूर्ति

विवेकानंद ने स्वधर्म के विचार का समर्थन किया। सभी को अपने जैसा विकसित होना है। किसी को दूसरों की नकल नहीं करनी है। इसलिए उन्होंने विदेशी शिक्षा को लागू करने की निंदा की। उन्होंने पूछा, "दूसरों के विचारों को विदेशी भाषा में दिल से प्राप्त करना और उनके साथ अपने दिमाग को कठोर करना और कुछ विश्वविद्यालय, डिग्री लेना, आप खुद को शिक्षित होने पर गर्व कर सकते हैं। क्या यही शिक्षा है?" सच्चा सुधार स्व–प्रेरित है। बच्चे पर किसी भी प्रकार का बाहरी दबाव नहीं होना चाहिए। बाहरी दबाव केवल विनाशकारी प्रतिक्रियाएँ पैदा करता है जिससे हठ और अनुशासनहीनता होती है। स्वतंत्रता, प्रेम और सहानुभूति के वातावरण में ही बच्चे में साहस और आत्मनिर्भरता का विकास होगा। उसकी गतिविधियों में अनावश्यक रूप से जाँच नहीं की जानी चाहिए। शिक्षक को लगातार उसे यह या वह करने के लिए नहीं कहना चाहिए। ऐसी नकारात्मक दिशाएँ उसकी बुद्धि और मानसिक विकास को कुंद कर देती हैं। उसे अपने दम पर खड़े होने के लिए, खुद होने के लिए बात करनी चाहिए। ऐसा इसलिए है क्योंकि विवेकानंद सुझाव देत हैं, "यदि आप एक बार शेर बनने की अनुमति नहीं देते हैं, तो वह लोमड़ी बन जाएगा।" इसलिए, व्यक्तिगत बच्चे के अनुरूप शिक्षा को संशोधित किया जाना चाहिए। प्रत्येक बच्चे को उसकी अपनी आंतरिक प्रकृति के अनुसार विकसित होने के अवसर दिए जाने चाहिए।

विकास की स्वतंत्रता

इस प्रकार विवेकानंद बच्चे पर किसी भी प्रकार के बाहरी दबाव के खिलाफ हैं। वे स्वतंत्रता के कट्टर समर्थक हैं। स्व–विकास के लिए स्वतंत्रता पहली आवश्यकता है। बच्चे को उसके स्वभाव के अनुसार बढ़ने की आजादी दी जानी चाहिए। विवेकानंद के शब्दों में, "आप एक पौधे को उगाने से ज्यादा एक बच्चे को नहीं सिखा सकते। आप जो कुछ भी कर सकते हैं वह नकारात्मक पक्ष है – आप केवल मदद कर सकते हैं। आप बाधाओं को दूर कर सकते हैं, लेकिन ज्ञान अपने स्वभाव से आता है। मिट्टी को थोड़ा ढीला करें, ताकि वह आसानी से निकल सके। इसके चारों ओर बाड़ लगाएं, देखें कि यह किसी चीज से नहीं मारा जाता है, और वहां आपका काम रुक जाता है। आप और कुछ नहीं कर सकते। बाकी अपनी प्रकृति के भीतर से एक अभिव्यक्ति है।"

निष्कर्ष

मानव निर्माण शिक्षा पर स्वामी विवेकानंद के विचार और मानव निर्माण शिक्षा में शिक्षक की भूमिका हमार दिन–प्रतिदिन के समाज में बहुत प्रासंगिक हैं। मैन मेकिंग एजुकेशन कई समस्याओं का समाधान करती है जो हाल के दिनों में उठाई गई हैं। उनके प्रसिद्ध शब्द; "जागो, उठो, और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए" – अभी भी राष्ट्र के युवाओं के बीच गूंजता है, उनकी सामाजिक चेतना को जगाता है और उनकी नम आत्माओं को जगाता है। हम स्वामी विवेकानंद के शब्दों के साथ सारांशित करते हैं: हमारे निचले वर्गों को दी जाने वाली एकमात्र सेवा उन्हें शिक्षा देना है; उनके खोए हुए व्यक्तित्व को विकसित करने के लिए। उन्हें विचार दें– उन्ह केवल यही मदद चाहिए और फिर बाकी प्रभाव के रूप में अनुसरण करेंगे। हमारा है रसायनों को एक साथ रखना,

क्रिस्टलीकरण प्रकृति के नियम में आता है। अब यदि पहाड़ मोहम्मद के पास नहीं आ सकता, तो मोहम्मद को पहाड़ पर जाना ही होगा। अगर गरीब लड़का शिक्षा के लिए नहीं आ सकता है, तो शिक्षा उसके पास जानी चाहिए। यह सत्य है और आज तक हमारे देश में इसकी प्रासंगिकता है। आम जनता को शिक्षित करने में शिक्षक की अहम भूमिका होती है।

संदर्भ सूची

- अग्रवाल, जे.सी. (2010), शिक्षा के सिद्धांत और सिद्धांत, यूपीः विकास पब्लिशिंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड।
- अविनाशीलिंगम, टी.एस. (1957), स्वामी विवेकानंद, श्री रामकृष्ण मठ, मायलापुर, चेन्नई के भाषणों और लेखन से शिक्षा का अनुपालन।
- बनर्जी, के.ए., मीता, एम. (2015)। स्वामी विवेकानंद का शैक्षिक दर्शन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड डेवलपमेंट वॉल्यूम। 4(3), पीपी 030–035।
- बेहरा, एस.के. (2015)। स्वामी विवेकानंद के आलोक में मानव–निर्माण शिक्षा। .
- स्वामी विवेकानंद का पूर्ण कार्य, अद्वैत आश्रम, कोलकाता, 1962, (इसके बाद सीडब्ल्यू) 2.15; 3.302.
- दास, बी.एन. (1994), फाउंडेशन ऑफ एजुकेशनल थॉट एंड प्रैक्टिस, नई दिल्लीः कल्याणी पब्लिशर्स।
- गुप्ता, एस. (2009), एजुकेशन इन इमर्जिंग इंडिया, नई दिल्लीः शिप्रा प्रकाशन।
- माधवी, बी. (2014)। ए ग्लेंस एट एजुकेशनल फिलॉसफी इन इंडियन माइथोलॉजी एंड इट्स टाइमलेसनेस। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ द फ्रंटियर्स ऑफ इंग्लिश लिटरेचर एंड द पैटर्न्स ऑफ ईएलटी, वॉल्यूम 2, अंक 1।
- निथिया, पी. (2012)। शिक्षा के दर्शन पर स्वामी विवेकानंद के विचार। एशियन जर्नल ऑफ मल्टीडायमेंशनल रिसर्च टवस.1, अंक 6.
- नायक, बी.के. (2006), फाउंडेशन ऑफ एजुकेशन, कटकः किताब महल।
- सक्सेना, एन.आर. स्वरूप (2006), फिलॉसॉफिकल एंड सोशियोलॉजिकल फाउंडेशन ऑफ एजुकेशन, मेरठः आर. लाल बुक डिपो।
- स्वामी विवेकानंद (2009), (किरण वालिया, कमांडर), माई आइडियल ऑफ एजुकेशन, कोलकाताः अद्वैत आश्रम।
- भूपेंद्रनाथ दत्ता। स्वामी विवेकानंद, देशभक्त–पैगंबर, नवभारत प्रकाशक, कोलकाता, 1993।
- चौबे, एस.पी. भारत में हाल के शैक्षिक दर्शन, राम प्रसाद एंड संस, आगरा, 1967।
- चतुर्वेदी बद्रीनाथ, स्वामी विवेकानंद, द लिविंग वेदांत, पेंगुइन, 2006।

- मैरी लुईस बर्क, स्वामी विवेकानंद, आधुनिक युग के पैगंबर, रामकृष्ण मिशन इंस्टीट्यूट ऑफ कल्चर, कोलकाता, 1974।
- रोमेन रोलैंड, द लाइफ ऑफ विवेकानंद एंड द यूनिवर्स गॉस्पेल, अद्वैत आश्रम, कोलकाता, 1975।
- राधा, आर. "विभिन्न युगों के माध्यम से भारत में महिलाओं के खिलाफ हिंसा का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य", इंटरनेशनल जर्नल ऑफ बेसिक एंड एप्लाइड रिसर्च, वॉल्यूम 9 नंबर 6, जून 2019 पीपी 149–153, यूजीसी जर्नल नंबर 64041, आईएसएसएन 2249–3352 (पी) 2278–0505 (ई), कॉसमॉस इम्पैक्ट फैक्टर–5.960।
- शर्मा, बी स्वामी विवेकानंद– ए फॉरगॉटन चैप्टर ऑफ हिज लाइफ, ऑक्सफोर्ड बुक, मिशिगन, 1963
- सिंह, वी. स्वामी विवेकानंदः सामाजिक क्रांति में पायनियर, विस्टा इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 2008।
- श्रीवास्तव, के.एस. और श्रीवास्तव, एस. महान दार्शनिक और शिक्षा पर विचारक, एपीएच प्रकाशन निगम, नई दिल्ली, 2011।
- स्वामी तेजसानंद, स्वामी विवेकानंद का एक लघु जीवन, अद्वैत आश्रम, कोलकाता, 2012।
- स्वामी विवेकानंद स्वयं पर, अद्वैत आश्रम, कोलकाता, 2006।
- स्वामी विवेकानंद का पूर्ण कार्य, खंड–5, अद्वैत आश्रम, कोलकाता, 2008।
- वर्मा, एम. भारतीय शिक्षा का दर्शन, मीनाक्षी प्रकाशन। मेरठ, 1969।